

चलचित्र (सिनेमा) के लाभ व हानियाँ

मनुष्य के लिए मनोरंजन अत्यन्त आवश्यक है। आधुनिक युग में विज्ञान ने मानव को मनोरंजन के अनेक साधन प्रदान किए हैं जैसे रेडियो, दूरदर्शन, फोटोग्राफी, चित्रकला, खेलकूद व प्रदर्शनियाँ आदि। इनमें सबसे अधिक लोकप्रिय व सस्ता साधन चलचित्र है। आज के युग में इसका अपना विशेष स्थान है। यह वह साधन है जहाँ धनी हो या निर्धन, एक टिकट खरीद कर दो – तीन घण्टे का समय एकान्त – शान्त व्यतीत कर सकता है।

चलचित्र जहाँ एक और मनोरंजन का अच्छा साधन है वहाँ दूसरी और शिक्षा का एक अच्छा माध्यम भी है। जिस वस्तु का जितना ज्ञान आँखों से देखकर होता है उसका उतना प्रभाव उस विषय को पढ़कर या सुनकर नहीं होता। विज्ञान, भूगोल, इतिहास आदि के पाठ विभिन्न देशों के रहन-सहन, वेशभूषा, परम्पराएँ व ऐतिहासिक स्थलों के चित्र हमारे हृदय – पटल पर अत्यधिक प्रभाव डालते हैं। चलचित्र में प्रयुक्त अच्छी – सी कहानी, सुन्दर गीत या कविता, कर्णप्रिय संगीत और छायाचित्रों के माध्यम से प्रकृति के सुन्दर-से सुन्दर दृश्य देखने को मिलते हैं। ठाठे मारता हुआ समुद्र, बर्फ से ढकी पहाड़ों की चोटियाँ, लहलहाते हुए हरे – भरे खेत, कलकल करते हुई नदियाँ, वन उपवनो में पशु – पक्षियों को अठखेलियाँ आदि मनोहारी दृश्य चलचित्र के पर्दे पर साकार हो उठते हैं। और हम उनका थोड़े से समय में तथा एक ही स्थान पर बैठे हुए भरपूर आनन्द प्राप्त कर लेते हैं। चलचित्र से हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है। जिन कुरीतियों को दूर करने में महान उपदेशक, प्रचारक तथा शिक्षक असफल हो जाते हैं उनको दूर करने में शिक्षाप्रद फिल्में बहुत सहायक सिद्ध हुई हैं। अच्छे चित्र सामाजिक चेतना तथा राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करते हैं तथा परिवारिक समस्याओं को सुलझाने में सहायता करते हैं। मदर इण्डिया, झांसी की रानी, जागृति, उपकार, शहीद भगतसिंह जैसे अनेक चित्रों ने हमें बहुत प्रभावित किया है। चलचित्र द्वारा विज्ञापन देकर व्यापार में भी आशातीत सफलता प्राप्त की जा सकती है। भारत सरकार के फिल्म प्रभाग द्वारा बनाए गे 'वृत्तचित्र' इस दिशा में अच्छा योगदान कर रहे हैं।

चलचित्र का दूसरा पहलू हानिकारक है। पैसा कमाने के लोभ में फिल्म निर्माता ऐसे चित्र बना डालते हैं जिन्हें देखकर देश के नवयुवकों का चारित्रिक पतन होने लाता है। विद्यार्थियों

में सिनेमा देखने की बुरी आदत पड़ जाती है जिससे वे विद्यालय से भाग कर तथा घर से पैसे चुराकर सिनेमा देखने जाने लगते हैं । उनकी आँखों पर भी इसका दुष्प्रभाव पड़ता है । वे चोरी, डकैती , अपहरण, कत्ल, बलात्कार आदि के दृश्य देखकर उनका अनुकरण करने का प्रयास करते हैं । अंत : चलचित्रों के चयन और उपयोग सोच- समझकर किया जाना चाहिए।